बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-129 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | फरवरी 2025 | मूल्य - 5 रूपए

वार्षिक परीक्षा में सफलता के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चे कर रहे हैं मेहनत

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, राजकिशोर एवं किशन

कड़ी मेहनत और आत्मविश्वास का परिणाम एक न एक दिन अवश्य नजर आता है। सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा की ओर निरंतर प्रयासरत हैं। शिक्षा जीवन की वह रोशनी है, जो अंधकार को दूर कर उजाले की ओर ले जाती है। लेकिन यह सफर उनके लिए आसान नहीं होता। विभिन्न सामाजिक और आर्थिक बाधाओं के बावजूद, ये सड़क एवं कामकाजी बच्चे पूरी लगन और मेहनत से अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। बालकनामा के पत्रकारों रों ने दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम और जयपुर की बस्तियों का दौरा कर इन बच्चों की परीक्षाओं से जुड़ी तैयारियों और उनके संघर्षों को करीब से समझने का प्रयास किया। उन्होंने उन बच्चों से मुलाकात की, जो इस वर्ष अपनी वार्षिक परीक्षाओं में सम्मिलित हो रहे हैं या परीक्षा दे चुके है। बच्चों ने अपनी मेहनत, संघर्ष और सपनों की कहानियाँ साझा कीं, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि ये बच्चे कठिनाइयों के बावजूद वे शिक्षा के प्रति कितने गंभीर और समर्पित हैं। पश्चिम दिल्ली में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए वार्षिक परीक्षा केवल ज्ञान का परीक्षण नहीं है, बल्कि उनके आत्मविश्वास को नई दिशा देने का सुनहरा अवसर भी है। कठिन परिस्थितियों में भी ये बच्चे शिक्षा को लेकर गंभीर हैं और अपने भविष्य के लिए पूरी मेहनत कर रहे हैं। इस वर्ष कक्षा दूसरी से नवमी तक कुल 446 बालक और बालिकाएं परीक्षा में सम्मिलित हुए हैं, जिनमें 211 बालक और 235 बालिकाएं शामिल हैं। वहीं, दसवीं कक्षा में कुल 9 छात्र-छात्राएं परीक्षा दे रहे हैं, जिनमें 5 बालक और 4 बालिकाएं हैं। 14 वर्षीय रूबल (परिवर्तित नाम), जो दिल्ली की एक बस्ती में रहती है, ने बताया, "शिक्षा की अहमियत को हर कोई नहीं समझ सकता, लेकिन जिनके पास यह सुविधा नहीं होती, वे इसका मूल्य भली-भांति जानते हैं। हमारे बस्ती में अधिकतर माता-पिता स्वयं पढ़े-लिखे नहीं हैं, और यह देखकर बहुत अफसोस होता है कि वे हमारे स्कूल के पाठ्यक्रम को समझने और हमारी पढ़ाई में मदद करने में असमर्थ हैं। मेरे माता-पिता चाहते हैं कि मैं पढ़ाई करूं, लेकिन मुझे कुछ विषयों, खासकर अंग्रेजी में बहुत कठिनाई होती है।" रूबल ने आगे बताया कि जब उसे पढ़ाई में दिक्कत होती थी, तब वह निराश हो जाती थी। कई बार उसे समझ में नहीं आता कि वह किससे मदद मांगे, क्योंकि घर में कोई पढ़ाई में सहायता करने वाला नहीं था। लेकिन जब चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र से जुड़ी, तो उसकी यह समस्या दूर होने

लगी। "अब जब मुझे किसी विषय में कठिनाई होती है, तो मैं चेतना के शिक्षा केंद्र जाती हूँ। वहाँ के कार्यकर्ता हमारी पढ़ाई में मदद करते हैं, जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। अब मुझे अंग्रेजी के शब्द समझ में आने लगे हैं, मैं नए वाक्य लिखने की कोशिश कर रही हूँ और धीरे-धीरे इस विषय में बेहतर हो रही हूँ।" रूबल की तरह पश्चिम दिल्ली के अन्य कई बालक और बालिकाएं भी शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं, अपनी परीक्षाओं की तैयारी पूरी मेहनत से कर रहे हैं और हर कठिनाई का डटकर सामना कर रहे हैं। जयपुर की कच्ची बस्तियों में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बालक और बालिकाएं भी अपनी परीक्षाओं को लेकर पूरी तरह समर्पित हैं। यहाँ इस वर्ष कुल 430 बच्चे परीक्षा में शामिल होने वाले हैं, जिनमें 215 बालक और 215 बालिकाएं हैं। इनमें ओपन बेसिक एजुकेशन (ङइए) के माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थी भी शामिल हैं। हाल ही में जयपुर के विभिन्न सरकारी विद्यालयों ने वार्षिक उत्सव का आयोजन भी किया था, जिसमें सड़क एवं कामकाजी बच्चों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बल्लभपुरा में पढ़ने वाले 14 वर्ष के मनीष ने बताया, "जब मुझे स्कूल के वार्षिक उत्सव में सम्मानित किया गया, तो मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया। जब मंच से मेरा नाम पुकारा गया और प्रधानाचार्य जी ने मुझे सम्मानित किया, तो मैं गर्व महसूस कर रहा था। यह मेरे शिक्षकों के सहयोग और मेरी मेहनत का परिणाम था। अब मैं आगे भी पूरे मन से पढ़ाई करूंगा।" ऐसे ही जयपुर के विद्याधर नगर के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले बालक 11 वर्ष के पवन ने बताया, "मुझे अच्छे आचरण (गुड मैनर्स) के लिए विद्यालय में विशेष रूप से सम्मानित किया गया। मुझे पुरस्कार स्वरूप किताबें और पेंसिल का एक विशेष सेट भी मिला। मेरे माता-पिता इस सम्मान को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। इससे मुझे यह सीख मिली कि अच्छे संस्कार और अनुशासन जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।"यह सम्मान मुझे आगे भी अच्छे व्यवहार और अनुशासन को बनाए रखने की प्रेरणा देता रहेगा। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों और अभिभावकों ने बच्चों की उपलब्धियों की सराहना की इसके अलावा, विद्यालय प्रशासन ने बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने कहा कि इन बच्चों की सफलता समाज के लिए

शेष पृष्ठ 2 पर

कच्ची बस्ती में दिव्यांग सशक्तिकरण केंद्र बना वरदान, हेयरिंग एड पाकर बालिका की लौटी मुस्कान

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः कोमल

जयपुर के जामडोली बस्ती में सरकार द्वारा स्थापित समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास, पुनर्वास एवं दिव्यांग सशक्तिकरण केंद्र अब जरूरतमंद दिव्यांगजनों के लिए नई उम्मीद बनकर उभर रहा है। इस केंद्र के माध्यम से न केवल दिव्यांगजन अपनी समस्याओं का समाधान पा रहे हैं, बल्कि उन्हें आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं और उपकरण भी निःशुल्क उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसी क्रम में जब बालकनामा रिपोर्टर दीपक की मुलाकात बालिका कोमल (11 वर्ष) से हुई, तो पता चला कि उसकी छोटी बहन नेहा (7 वर्ष), जो जन्म से ही सुनने में असमर्थ थी, अब सुनने में सक्षम हो गई है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से ताल्लुक रखने के कारण उसकी माता इस समस्या का इलाज करवाने में सक्षम नहीं थीं। जानकारी और संसाधनों के अभाव में वर्षों तक बच्ची का उपचार नहीं हो सका। हालांकि, जब चेतना कार्यकर्ता के माध्यम से इस केंद्र की जानकारी मिली, तो लक्ष्मी की माता ने नेहा को वहां ले जाने का निर्णय लिया। केंद्र के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने जांच के बाद पाया कि नेहा में सुनने की क्षमता तो है, लेकिन बहुत कम। डॉक्टरों ने सुझाव दिया कि यदि उसे उपयुक्त सुनने की मशीन (हियरिंग एड) दी जाए, तो उसकी सुनने की क्षमता में सुधार हो सकता है। इसके बाद, केंद्र द्वारा नेहा को निःशुल्क श्रवण यंत्र प्रदान किया गया। जैसे ही उसने पहली बार स्पष्ट रूप से आवाज सुनी, उसके चेहरे पर खुशी की झलक देखने लायक थी। परिवार की भी खुशी का ठिकाना नहीं रहा–अब नेहा न सिर्फ अपने परिवार की बातें सुन पा रही है, बल्कि धीरे-धीरे बोलने का अभ्यास भी कर रही है। बस्ती के अन्य लोग भी इस केंद्र की प्रशंसा कर रहे हैं और इसे "दिव्यांगजनों के लिए वरदान" बता रहे हैं। यह केंद्र सिर्फ स्वास्थ्य सेवाएं ही नहीं दे रहा, बल्कि कौशल विकास और पुनर्वास के जरिए दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने में भी अहम भूमिका निभा रहा है। स्थानीय प्रशासन ने भी इस पहल की सराहना करते हुए इसे और अधिक जरूरतमंदों तक पहुंचाने की बात कही है। जामडोली बस्ती में इस केंद्र के खुलने से दिव्यांग बच्चों और बड़ों को बेहतर जीवन जीने का अवसर मिल रहा है, जिससे समाज में समावेशिता और समानता को बढ़ावा मिल रहा है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संघर्ष के साथ शिक्षा की राह पर बढ़ता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: रोहन

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जब आगरा रोड, पालड़ी बस्ती, जयपुर का दौरा किया, तो उनकी मुलाकात 14 वर्षीय मोहन (परिवर्तित नाम) से हुई। बातचीत के दौरान पता चला कि मोहन न केवल अपने परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियाँ उठा रहा है, बल्कि अपने सपनों को भी साकार करने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहा है। मोहन हर दिन दोपहर 3 बजे से रात 9 बजे तक बालाजी भोजनालय में काम करता है, जहाँ वह ग्राहकों को चाय परोसता, बर्तन धोता और खाना बनाने में मदद करता है। इसके बदले में उसे प्रतिदिन 200 रुपये मिलते हैं। लेकिन जब रात होती है, तो वही मोहन अपने भविष्य को संवारने के लिए किताबों में डूब जाता है। मोहन के दो बड़े भाई हैं, लेकिन शादी के बाद वे जयपुर छोड़कर बाहर चले गए और अब अपने परिवार के साथ रहते हैं। वे माता-पिता की देखभाल नहीं करते। मोहन के पिता मजदूरी करते हैं, लेकिन अनियमित काम और कम आमदनी के कारण घर चलाना मुश्किल हो जाता है। वहीं, उसकी माँ टी.बी. की बीमारी से जूझ रही हैं। इस स्थिति में परिवार की जिम्मेदारी मोहन के नाजुक कंधों पर आ गई। कम उम्र में ही काम की कठिनाइयों का सामना करने

के बावजूद, मोहन ने अपने सपनों से समझौता नहीं किया। वह सरकारी नौकरी पाने का सपना देखता है और इसके लिए हर संभव कोशिश कर रहा है। वह कहता है, "हालात चाहे जैसे भी हों, अगर हौसला मजबूत हो तो हर मुश्किल आसान हो सकती है। मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए हर चुनौती का सामना करने को तैयार हूं।"मोहन की यह सोच केवल उसके संघर्ष को नहीं, बल्कि उसकी उम्मीद, हिम्मत और दृढ़ निश्चय की भी है। वह उन लाखों बच्चों के लिए प्रेरणा है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सपनों को साकार करने की हिम्मत रखते हैं।

पुनर्वास की दहलीज पर : नया घर मिला, पर पुरानी बस्ती छूटी

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: काजल

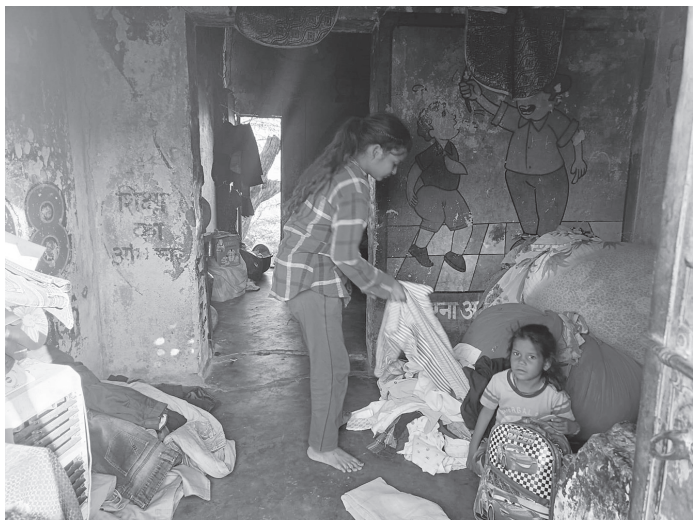

पुनर्वास एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। लाखों लोग रोजगार, परिवार और बेहतर जीवन की तलाश में देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में प्रवास करते हैं। नौकरीपेशा लोग और मजदूर इसका प्रमुख उदाहरण हैं। कच्ची बस्तियों की बड़ी समस्याओं में से एक पलायन हमेशा से रहा है। लेकिन हमारे बालकनामा रिपोर्टर ने इस बदलाव के एक सकारात्मक पहलू को देखा। जयपुर विकास प्राधिकरण (खऊअ) ने बापू बस्ती के निकट किशनबाग में गुजराती समुदाय के कुछ परिवारों को क्वार्टर आवंटित किए हैं। ये वे परिवार हैं जिन्होंने लगभग दो वर्ष पहले इसके लिए आवेदन किया था। अब इन्हें आवासीय घरों में बसाया जा रहा है। हालांकि, अभी अभिभावकों को स्पष्ट जानकारी नहीं है कि उन्हें इसके लिए किराया देना होगा या नहीं, लेकिन उन्होंने अपना आधा सामान वहाँ शिफ्ट कर दिया है। बस्ती के छह परिवारों को इस पुनर्वास का लाभ मिला है। ये सभी वर्षों से किराये के छोटे-छोटे कमरों में सीमित सुविधाओं के साथ रह रहे थे। बच्चों की इस पर मिली-जुली प्रतिक्रिया है, वे खुश हैं कि उन्हें रहने के लिए बेहतर जगह मिलेगी, लेकिन उदास भी हैं क्योंकि बस्ती में उनके पुराने दोस्त छूट जाएंगे।

12 वर्षीय रणवीर बताता है, "वहाँ आसपास जंगल है, रात को बाहर खेल नहीं सकते। अजीब-अजीब आवाजें आती हैं जो डराती हैं, लेकिन दिन में पेड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता है।" 29 वर्षीय बुधिया के तीन बच्चे बस्ती के पास स्थित सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं। वह चिंतित हैं कि अब स्कूल की दूरी बढ़ जाएगी और उन्हें बच्चों को लाने-ले जाने में परेशानी होगी। परंतु, अपने खुद के घर की उम्मीद से वह खुश भी हैं। 14 वर्षीय कोयल (परिवर्तित नाम) कहती है, "नए घर में जाकर अच्छा लग रहा है क्योंकि वहाँ हमें अपने दो कमरे मिलेंगे। लेकिन अभी वहाँ न पानी है, न बिजली। इसलिए दिन में वहाँ रहते हैं और रात में वापस बस्ती लौट आते हैं। जब पानी और बिजली की व्यवस्था हो जाएगी, तब वहीं रहेंगे।" कोयल फिलहाल बस्ती में एक पुराने, 2000 रुपये किराए के अंधेरे कमरे में रहती है। वह कपड़ों के बदले बर्तनों की फेरी लगाने जाती है। जब वह अपने कमरे से सामान निकाल रही थी, उसकी आँखों में अजीब सी चमक थी, एक उम्मीद की, और एक उदासी की। "यादों पर किराया भारी होता है..." वह धीमे से मुस्कुराई और अपने पुराने कमरे को एक अंतिम नजर से देखा। नई शुरूआत के सपने तो हैं, लेकिन बस्ती की गलियों में बीते दिनों की यादें भी कम नहीं...

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

वार्षिक परीक्षा में सफलता के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चे कर रहे हैं मेहनत

पृष्ठ 1 का शेष

प्रेरणास्रोत है और शिक्षा से ही उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव संभव है। गुरुग्राम में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए शिक्षा का सफर आसान नहीं रहा, लेकिन उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें आगे बढ़ने की शक्ति दी है। यहाँ इस वर्ष कक्षा दूसरी से नवमी तक कुल 389 बच्चे परीक्षा दे रहे हैं, जिनमें 215 बालक और 174 बालिकाएं शामिल हैं। रिया (परिवर्तित नाम), 10 वर्ष, जो गुरुग्राम की एक बस्ती में रहती है, उसका सफर संघर्ष से भरा रहा है। उसके पिताजी और माताजी दोनों घरेलू कामों में मजदूरी करते हैं। वह तीसरी कक्षा में पढ़ती है और अब आत्मविश्वास से भरी हुई दिखती है। लेकिन कुछ समय पहले तक स्थिति बहुत अलग थी। रिया ने बताया कि पहले उसे हिंदी पढ़ना नहीं आता था, लेकिन अब वह न केवल हिंदी पढ़ सकती है बल्कि मात्राओं का भी सही ज्ञान प्राप्त कर चुकी है। स्कूल में दाखिला लेना उसके लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था। जब उसका नामांकन हुआ और वह पहली बार स्कूल गई, तो उसकी उपस्थिति ही दर्ज नहीं की गई। शिक्षक अक्सर उससे कहते, "तुम्हारा नाम सूची में नहीं है, तुम यहाँ मत आओ।" यह सुनकर वह बहुत निराश होती थी। जब उसकी इस समस्या का समाधान नहीं निकला, तो वह गाँव चली गई। कुछ समय बाद जब वह वापस लौटी, तो उसने फिर से स्कूल में दाखिला लेने की कोशिश की, और इस बार उसका नामांकन सही तरीके से हुआ। अब वह हर दिन स्कूल जाती है, और पहले की तुलना में अधिक आत्मविश्वासी महसूस करती है। उसने बताया कि पहले उसे अंग्रेजी पढ़ना नहीं आता था, लेकिन अब वह इसे भी सीखने लगी है। अब उसे स्कूल जाना अच्छा लगता है, और वह अपने भविष्य को लेकर उत्साहित है। 7 वर्षीय कुलसुम (परिवर्तित नाम) का सफर भी कुछ ऐसा ही रहा। वह गुरुग्राम की एक झुग्गी बस्ती में रहती है, जहाँ उसके पिताजी माली का काम करते हैं और माताजी घरों में सफाई का कार्य करती हैं। वह दूसरी कक्षा में पढ़ती है, लेकिन पहले उसे स्कूल जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। कारण यह था कि वह अन्य बच्चों की तुलना में पढ़ाई में कमजोर थी, और इसी वजह से सहपाठी उसे कमतर आंकते थे। वे उससे सही से बात नहीं करते थे और उसे अपने साथ बैठाने से भी कतराते थे। यह स्थिति कुलसुम के आत्मविश्वास को कमजोर कर रही थी, और धीरे-धीरे उसने स्कूल जाना ही बंद कर दिया। लेकिन इसी दौरान चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं ने उससे संपर्क किया और उसे समझाया कि पढ़ाई ही उसका भविष्य सुधार सकती है। उन्होंने उसे अपने शिक्षा केंद्र पर आने के लिए प्रेरित किया। कुलसुम ने केंद्र पर नियमित रूप से जाना शुरू किया और धीरे-धीरे पढ़ाई में रुचि लेने लगी। कुछ महीनों में उसने पढ़ना सीख लिया और अब वह पूरे आत्मविश्वास के साथ स्कूल जाती है। पहले जहाँ वह अन्य बच्चों से बात करने में हिचकती थी, अब वह खुलकर अपनी बात कहती है। हालाँकि, कुलसुम ने एक और समस्या पर ध्यान दिलाया–उसके स्कूल का शौचालय और कक्षा-क्षेत्र बहुत गंदे रहते हैं। इस कारण से कई बार वह स्कूल में असहज महसूस करती है। लेकिन इन सबके बावजूद, अब वह शिक्षा को लेकर पूरी तरह जागरूक हो चुकी है। "अब मैं तीसरी कक्षा में हूँ और अगले साल चौथी कक्षा में जाने की तैयारी कर रही हूँ। अब पढ़ाई में मेरी रुचि बढ़ गई है, और मैं अपने भविष्य को लेकर उत्साहित हूँ," उसने गर्व से कहा। नोएडा के विभिन्न स्कूलों में इस बार बड़ी संख्या में बच्चे वार्षिक परीक्षा दे रहे हैं। यहाँ कक्षा दूसरी से नवमी तक कुल 446 बच्चे परीक्षा में सम्मिलित हुए हैं, जिनमें 211 बालक और 235 बालिकाएं हैं। इन बच्चों के लिए यह परीक्षा केवल एक शैक्षणिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि उनके आत्मविश्वास और भविष्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की परीक्षा भी है। नोएडा सेक्टर 49 की बस्ती में रहने वाली 14 वर्षीय बालिका नैना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ वर्ष पहले वह नियमित रूप से विद्यालय जाती थी, लेकिन वहाँ के माहौल ने उसे निराश कर दिया। विद्यालय में अध्यापिकाओं का व्यवहार अधिकतर बच्चों के प्रति ठीक नहीं था। वे बच्चों से ढंग से बात नहीं करती थीं और पढ़ाई के प्रति कोई रुचि नहीं दिखाती थीं। एक दिन जब विद्यालय में उन्हें स्कूल ड्रेस दी जा रही थी, तब भी उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया। जब यह बात उसने अपने माता-पिता को बताई, तो वे विद्यालय गए और अध्यापिका से बातचीत करने का प्रयास किया। लेकिन वहाँ भी उन्हें झूठा ठहरा दिया गया। अध्यापिका ने कहा कि बच्चे झूठ बोल रहे हैं और उनके साथ कोई गलत व्यवहार नहीं हुआ। यह सुनकर बालिका और उसकी बस्ती के अन्य बच्चों को बहुत बुरा लगा। अंततः बस्ती के 10 बच्चों ने विद्यालय छोड़ दिया और औपचारिक स्कूल से नाम कटवा लिया। अब वह ओपन बेसिक एजुकेशन (डइए) के माध्यम से आठवीं कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रही है। उसे पढ़ाई में अधिक कठिनाइयाँ नहीं होतीं, क्योंकि उसके घर में उसका बड़ा भाई पढ़ा-लिखा है और उसकी पढ़ाई में सहायता करता है। उसे इस बात की खुशी है कि उसके परिवार वाले उसकी शिक्षा को गंभीरता से लेते हैं और रोज उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। वर्तमान में वह आठवीं कक्षा की परीक्षा दे रही है और भविष्य में आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी बस्ती में रहने वाली 13 वर्षीय बालिका नेहा (परिवर्तित नाम) की कहानी भी कुछ इसी प्रकार की है। उसने बताया कि जब परीक्षा का समय आता है, तो उसे बहुत डर लगता है कि प्रश्न-पत्र में क्या आएगा और वह कैसे हल कर पाएगी। लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी और हर चुनौती का डटकर सामना किया। वह केवल पढ़ाई ही नहीं करती, बल्कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए ब्यूटी पार्लर का कार्य भी सीख रही है। हालाँकि, कई बार काम की अधिकता के कारण उसकी पढ़ाई प्रभावित होती है, लेकिन जहाँ वह काम सीख रही है, वहाँ की दीदी पढ़ाई में उसका पूरा सहयोग करती हैं। परीक्षा के समय वे उसे अतिरिक्त समय देती हैं, ताकि वह अपनी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर सके। इन बच्चों की कहानियाँ यह साबित करती हैं कि शिक्षा के प्रति उनका समर्पण और मेहनत अद्भुत है। कठिन परिस्थितियों के बावजूद वे अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। बालकनामा रिपोर्टर दीपक, राजकिशोर, किशन ने इन बच्चों की कहानियाँ सुनीं और उन्हें शिक्षा के प्रति समर्पित पाया। इन बच्चों की मेहनत और लगन हमें सिखाती है कि अगर सही मार्गदर्शन और सहयोग मिले, तो कोई भी बाधा शिक्षा के इस सफर को रोक नहीं सकती। इन बच्चों की सफलता के लिए ये प्रयास यह साबित करते है कि यदि अवसर मिले, तो सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी किसी से कम नहीं हैं। वे भी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं और एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ सकते है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संघर्ष की सवारी में बचपन खोकर जिम्मेदारियों का सफर तय करता किशोर

बातूनी रिपोर्टर राहुल व
रिपोर्टर किशन

जब बालकनामा के पत्रकार सड़क पर खड़े होकर बच्चों की गतिविधियों को देख रहे थे, तो उन्होंने गौर किया कि ज्यादातर बच्चे कठिन परिस्थितियों में काम कर रहे थे। तभी उनकी नजर 16 वर्षीय एक किशोर पर पड़ी। उन्होंने उसके पास जाकर बातचीत की, और उस किशोर ने अपने जीवन की कहानी साझा की। उसने बताया, "मैं 16 साल का हूं और ई-रिक्शा चलाने का काम करता हूं। यह ई-रिक्शा किराए पर लेता हूं, जिसके लिए रोजाना 300 किराया और 100 चार्जिंग के देने पड़ते हैं। यानी हर दिन 400 देने पड़ते हैं। चार्जिंग का इंतजाम हम अपनी ही बस्ती में करते हैं। कुछ महीने पहले मेरी मां की तबीयत बहुत खराब हो गई थी। उनके पेट में पथरी हो गई थी, और इलाज में काफी पैसा लग गया। उस समय मैं कोई काम नहीं कर रहा था और घर पर ही रहता था। मेरे दो बड़े भाई दिल्ली में काम करते हैं, उन्हीं के भेजे पैसे से मां का इलाज कराया। अब मां की तबीयत थोड़ी ठीक है, लेकिन वह अभी भी काम करने में असमर्थ हैं। इसलिए मुझे घर का सारा जिम्मा उठाना पड़ता है।" उसकी दिनचर्या बेहद कठिन है। वह सुबह 7 बजे ई-रिक्शा लेकर निकलता है और रात 8 बजे घर लौटता है। दोपहर में वह एक-दो घंटे के लिए घर जाता है, जहां

वह नहाता और खाना खाता है, उसी दौरान ई-रिक्शा की बैटरी भी थोड़ी चार्ज हो जाती है। लेकिन काम के दौरान उसे कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। उसने कहा, "जब मैं अपना रिक्शा स्टैंड पर लगाता हूं तो कई लोग मुझे छोटा समझकर डांटते और फटकारते हैं। लेकिन मैं समझदारी से रिक्शा चलाता हूं और रोजाना 700-800 तक कमा लेता हूं, जिससे घर का खर्च चलता है।" यह कहानी सिर्फ एक बालक की नहीं, बल्कि उन हजारों बच्चों की है, जो कम उम्र में ही जिम्मेदारियों का बोझ उठाने को मजबूर हैं। उनके पास खेलने-कूदने की उम्र में संघर्ष करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

बालिका ने समझदारी से बचाई अपनी जान

बातूनी रिपोर्टर नाजिया व रिपोर्टर किशन

क्या हुआ कि बालिका ने अचानक स्कूल जाना छोड़ दिया? तो आइए जानते है, एक रोज की बात है जब पश्चिमी दिल्ली की एक झुग्गी बस्ती में रहने वाली 7 वर्षीय बालिका मिनी (परिवर्तित नाम) से जब हमारी मुलाकात हुई, तो उसकी आंखों में उदासी और डर साफ झलक रहा था। वह धीमी आवाज में अपने साथ हुए हादसे को बताते हुए कहती है, "मैं अपने माता-पिता के साथ किराए की झुग्गी में रहती हूँ। मेरे माता-पिता सुबह ही काम पर चले जाते हैं और देर शाम लौटते हैं। दिनभर मैं और मेरे भाई-बहन घर पर अकेले रहते हैं। मैं तीसरी कक्षा में पढ़ती हूँ, लेकिन हमारे इलाके में माहौल इतना सुरक्षित नहीं है कि हम निश्चिंत होकर स्कूल जा सकें।" फिर वह उस भयावह दिन को याद करते हुए बताती है, "एक दिन सुबह 8 बजे जब मैं स्कूल के लिए निकली, तो रास्ते में एक बूढ़ी अम्मा बैठी थीं। जैसे ही मैं उनके पास से गुजरी, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा कि उन्हें मुझसे कुछ काम है और मुझे उनके घर के अंदर चलना होगा। मैं डर गई थी। मुझे नहीं पता था कि अगर मैं अंदर चली जाती, तो मेरे साथ क्या होता। जैसे ही अम्मा उठकर मुझे अंदर ले जाने लगीं, मैंने हिम्मत दिखाई और उनके हाथ पर जोर से दांत काट लिया। जैसे ही उन्होंने मेरा हाथ छोड़ा, मैं तेजी से भागकर अपने घर पहुंच गई।" उस दिन शाम को जब उसकी माँ काम से लौटीं, तो उसने पूरा वाकया उन्हें बताया। डर के कारण, अगले कुछ दिनों तक उसने स्कूल जाना भी बंद कर दिया। उसे डर था कि अगर वह फिर से उसी रास्ते से गई और वह बूढ़ी अम्मा मिल गईं, तो वह दोबारा उसे पकड़ सकती थीं। जब बच्ची ने अपनी माँ से कहा कि यह घटना केवल उसके साथ ही नहीं, बल्कि अन्य बच्चों के साथ भी हो चुकी है, तब भी उसकी माँ ने इसकी कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करवाई। मिनी ने कहा "एक हफ्ते बाद जब मैं दोबारा स्कूल गई, तो मैंने अपनी अध्यापिका को इस घटना के बारे में बताया। उन्होंने मुझे सतर्क रहने के कई उपाय समझाए," जब पत्रकारों को इस घटना का पता चला, तो उन्होंने बालिका को जागरूक किया कि सिर्फ माता-पिता ही नहीं, बल्कि बच्चे भी 1098 हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करके अपनी परेशानी बता सकते हैं। लेकिन कॉल करने से पहले अपने जिले, तहसील और थाने का नाम याद रखा जाये तो बेहतर होता है। यह घटना सिर्फ एक बच्ची की नहीं, बल्कि उन सभी बच्चों की है जो असुरक्षित माहौल में जी रहे हैं। बच्चों को सतर्क रहने, अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक होने और जरूरत पड़ने पर तुरंत मदद मांगने की जानकारी होना बेहद जरूरी है।

बस्ती में मीठे पानी की बहाली से बच्चों में खुशियों की लहर

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः सोहीन

जयसिंहपुरा खोर बस्ती के बातूनी रिपोर्टर सोहीन ने बताया कि उनकी बस्ती लंबे समय से मीठे पानी की गंभीर समस्या से जूझ रही थी। हालांकि बस्ती में बोरिंग लगी हुई है, लेकिन उसमें से खारा पानी आता था, जो पीने योग्य नहीं था। इस कारण लोगों को हर दिन टैंकर से पानी मंगवाना पड़ता था, जिसके लिए प्रति बाल्टी 10 रुपये चुकाने पड़ते थे। बढ़ती महंगाई के बीच, पहले से ही आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहे बस्तीवासियों के लिए यह अतिरिक्त बोझ बहुत कठिन था। पीने के पानी की कमी ने उनके जीवन को और भी संघर्षपूर्ण बना दिया था। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। इस समस्या को हल करने के लिए बस्ती के सरपंच ने प्रशासन और पार्षद को कई बार अवगत कराया और लिखित शिकायत भी दर्ज करवाई। वर्षों के संघर्ष और लगातार प्रयासों के बाद, आखिरकार चार साल बाद मीठे पानी की आपूर्ति बहाल हुई, जो बस्ती के लिए किसी उत्सव से कम

नहीं है। स्थानीय लोगों और सामाजिक संगठनों की कोशिशों से सरकार ने पाइपलाइन बदलने और जलापूर्ति सुधारने का कार्य किया। नई पाइपलाइन बिछने के बाद अब क्षेत्रवासियों को स्वच्छ और मीठा पानी मिलने लगा है, जिससे पूरे बस्ती में खुशी की लहर दौड़ गई है। बच्चों का कहना है कि अब उनके घरों में लगे नलों से मीठा पानी आने लगा है, जिससे उन्हें पानी खरीदने की चिंता नहीं रहेगी। पहले भोजन के लिए पानी जुटाने में बहुत समय बर्बाद होता था, लेकिन अब वे इस समय का सही उपयोग अपनी पढ़ाई के लिए कर पाएंगे। पानी की इस उपलब्धता ने न केवल उनके जीवन को आसान बनाया है, बल्कि उनके भविष्य की राह भी सुगम कर दी है।

जब जलावन की लकड़ी ही रोटी की उम्मीद हो

बातूनी रिपोर्टर नीलम व रिपोर्टर किशन

यह कहना बिल्कुल सही होगा - "जहां पब्लिक, वहां कमाई।" जब बालकनामा पत्रकारों अर्थात हमने बच्चों से बातचीत की, तो हमें इस बात का असली अर्थ समझने में थोड़ा वक्त लगा। नोएडा में कई जगहों पर बड़ी संख्या में झुग्गियां बसी हुई हैं। हम एक ऐसे इलाके में पहुंचे, जहां 400 से अधिक झुग्गियां थीं। वहां रहने वाले बच्चों से मुलाकात के दौरान, 15 वर्षीय एक बच्ची खुशबू (परिवर्तित नाम) ने हमें अपनी जिंदगी की सच्चाई से रूबरू कराया। उसने बताया कि जहां ज्यादा झुग्गियां होती हैं, वहां पब्लिक भी ज्यादा होती है और इसी से उनके लिए कमाई के साधन भी बनते हैं। बस्ती से लगभग 500 मीटर की दूरी पर एक घना जंगल है। इस जंगल में सूखी और गीली लकड़ियां मिलती हैं, जिन्हें बस्ती के कई बच्चे इकट्ठा करने जाते हैं। ये लकड़ियां उनके लिए बहुत अहमियत रखती हैं क्योंकि इन्हीं से घर का चूल्हा जलता है, खाना बनता है, और कुछ परिवार तो इन्हीं लकड़ियों का इस्तेमाल पकौड़ियां बनाने के लिए करते हैं। यही पकौड़ियां वे बस्ती में बेचते हैं। 250 ग्राम पकौड़ियां को बेचने पर 30 मिलते हैं, इसी आमदनी से घर का गुजारा चलता है। खुशबू ने बताया कि अगर लकड़ी न मिले, तो खाना बनाना भी मुश्किल हो जाता है और कई बार उन्हें भूखे सोना पड़ता है। यही वजह है कि बस्ती के अन्य बच्चे भी जंगल में लकड़ियां बीनने जाते हैं, ताकि उनके घर का चूल्हा जलता रहे। उनके लिए यह सिर्फ ईंधन नहीं, बल्कि जीवन जीने का जरिया है।

कबाड़ के बीच पनपता शिक्षा का सपना

बातूनी रिपोर्टर अंकित व रिपोर्टर किशन

यह जीवन अपने आप में एक परीक्षा है। जब हम मुश्किलों का सामना करते हैं, तो कहा जाता है कि भगवान हमारी परीक्षा ले रहे हैं, लेकिन अगर गहराई से सोचें, तो हर दिन, हर परिस्थिति हमें कुछ न कुछ सिखाने के लिए आती है। इसी संदर्भ में, जब बालकनामा पत्रकार अपने दौरे पर निकले, तो उन्होंने कई बच्चों को परीक्षा देकर खुशी-खुशी घर लौटते देखा। बच्चों से बातचीत के दौरान, 13 वर्षीय एक बालिका फातिमा (परिवर्तित नाम) ने अपनी कहानी साझा की। उसने बताया, "मैं बिहार की रहने वाली हूं, लेकिन वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ पश्चिमी दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में रहती हूं। मेरे माता-पिता कबाड़ बीनने और छांटने का काम करते हैं, और मैं भी उनकी सहायता करती हूं। हालांकि, मैं रोज स्कूल जाती हूं और इस समय सातवीं कक्षा की परीक्षा दे रही हूं। मेरे पिता सुबह-सुबह कबाड़ इकट्ठा करने निकल जाते हैं और दोपहर में उसे लेकर लौटते हैं। स्कूल से आने के बाद, मैं भी उनके साथ कबाड़ छांटने में मदद करती हूं, साथ ही अपने छोटे भाई का भी ध्यान रखती हूं।"

उसकी बातों में एक आत्मविश्वास झलक रहा था। उसने आगे बताया, "हमारी बस्ती में कई बच्चे इसी तरह काम के साथ-साथ स्कूल भी जाते हैं। मुझे इंग्लिश और मैथ्स के विषय

मुश्किल लगते हैं, लेकिन मैं हार नहीं मानती। स्कूल में अपनी अध्यापिका से सवाल पूछती हूं और जब घर पर पढ़ाई करते समय कोई परेशानी होती है, तो चेतना संस्था के एजुकेशन क्लब में जाकर मदद लेती हूं। वहां की कार्यकर्ता भी मेरी समस्याओं को दूर करने में सहायता करती हैं, जिससे मैं अपनी पढ़ाई में बेहतर कर पाती हूं।" परीक्षा को लेकर उसका नजरिया बेहद प्रेरणादायक था। उसने गर्व से कहा, "जब मैं परीक्षा देती हूं, तो बिल्कुल नहीं डरती। मैं समझदारी से उत्तर लिखती हूं और जो सवाल समझ नहीं आते, उन्हें अध्यापिका से पूछकर हल करने की कोशिश करती हूं। मुझे अपनी मेहनत पर भरोसा है और मेरा मानना है कि डरना उन्हें चाहिए, जो शिक्षा पर ध्यान नहीं देते। परीक्षा के दिनों में मेरे माता-पिता भी मेरी पढ़ाई को प्राथमिकता देते हैं और मुझे घरेलू कामों में व्यस्त नहीं करते। इससे मुझे और भी अच्छा महसूस होता है।"

रेलवे पटरी के किनारे बसी बस्ती में खौफ और बेबसी की जिंदगी

ब्यूरो रिपोर्ट

पश्चिम दिल्ली की एक झुग्गी बस्ती, जो रेलवे ट्रैक के करीब बसी हुई है। बालकनामा पत्रकारों की एक टीम जब यहां के हालात जानने पहुंची, तो उन्होंने रेलवे पटरी के पास कुछ लोगों को झुंड में बैठे देखा। ये लोग नशे में धुत थे, उनकी हरकतें संदिग्ध लग रही थीं। पहले तो पत्रकार कुछ समझ नहीं पाए, लेकिन जब उन्होंने बस्ती के एक 14 वर्षीय बालक जॉन (परिवर्तित नाम) से बातचीत की, तो एक भयावह सच्चाई सामने आई। बालक ने बताया, "आपने देखा होगा कि रेलवे पटरी के पास कुछ नशेड़ी लोग झुंड बनाकर बैठे हैं। यह उनका रोज का ठिकाना है। ये लोग इसी ताक में रहते हैं कि कब कोई अकेला आदमी, महिला या लड़की उनके रास्ते से गुजरे और वे उससे कुछ छीनकर अपना दिन निकाल सकें।"

बस्ती के सभी लोग अर्थात बच्चे, महिलाएं, पुरुष आदि रेलवे ट्रैक के किनारे बने रास्ते से ही मार्केट और स्कूल जाते हैं। लेकिन इस रास्ते पर बैठे नशेड़ी हर किसी के लिए खतरा बने हुए हैं। यहां के लोगों के मन में हमेशा एक डर बना रहता है, क्योंकि ये नशेड़ी किसी को भी अपना शिकार बना सकते हैं। वे राहगीरों को पकड़कर उनके पैसे, मोबाइल और कीमती सामान छीन लेते हैं। और अगर कोई विरोध करे या देने से मना करे, तो वे अपने पास रखे चाकू, ब्लेड या अन्य हथियार निकाल लेते हैं और हमला कर देते हैं। बस्ती में ऐसे कई हादसे हो चुके हैं, जहां लोगों को लूट लिया गया, उनके मोबाइल और पैसे छीन लिए गए। जब कोई पीड़ित अपने पड़ोसियों को इस बारे में बताता है, तो कई बार आसपास के लोग उन अपराधियों को पहचान भी लेते हैं। कुछ मामलों में, स्थानीय लोगों के प्रयास से लूटे गए मोबाइल और पैसे वापस मिल जाते हैं, लेकिन ज्यादातर मामलों में ऐसा नहीं होता। जो लोग अपना सामान वापस नहीं पा सकते, वे मजबूरी में पुलिस में शिकायत दर्ज कराते हैं। परंतु इसका भी कोई खास फायदा नहीं होता। अपराधी तीन-चार दिनों में ही छूटकर वापस आ जाते हैं और फिर जिस व्यक्ति ने उनके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई होती है, उसे और उसके परिवार को जान से मारने की धमकी देते हैं। कई बार वे पिटाई तक कर देते हैं। बस्ती के लोग इस डर के साये में जीने को मजबूर हैं। नशेड़ियों के आतंक ने उनकी जिंदगी मुश्किल बना दी है, और सुरक्षा की कोई ठोस व्यवस्था नहीं है।

खेलने-पढ़ने की उम्र में बच्चे उठा रहे हैं घर की जिम्मेदारियां

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः राज

बाल मजदूरी एक गहरी सामाजिक समस्या है, जो न केवल बच्चों के भविष्य को अंधकारमय बनाती है, बल्कि उनके शारीरिक और मानसिक विकास पर भी गंभीर प्रभाव डालती है। यह समस्या समाज को आगे बढ़ने से रोकती है और मासूम बचपन को कठिनाइयों में धकेल देती है। वजीराबाद में भी स्थिति कुछ अलग नहीं है। यहाँ कई बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़कर कबाड़ बीनने, जनरल स्टोर, ढाबों और अन्य छोटे-मोटे काम करने को मजबूर हैं। उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि वे बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय काम पर भेजना ज्यादा जरूरी समझते हैं। उनका मानना है कि पढ़ाई से बेहतर है कि बच्चे कुछ काम करके पैसे कमा लें, जिससे घर का खर्च चल सके। लेकिन यह कौन समझाए कि अगर ये बच्चे शिक्षा प्राप्त करें, तो उनका भविष्य कहीं अधिक सुरक्षित और उज्ज्वल बन सकता है? आज के समय में बाल मजदूरी को

रोकने के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ काम कर रही हैं। बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए विभिन्न योजनाएँ और सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं। सरकारी स्कूलों में मुफ्त शिक्षा, भोजन और अन्य संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं, ताकि कोई भी बच्चा केवल गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित न रहे। इसके बावजूद, जब तक माता-पिता और समाज इस गंभीर मुद्दे को समझकर बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तत्पर नहीं होंगे, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। हमें मिलकर इस मानसिकता को बदलना होगा कि बच्चों को काम पर भेजना आर्थिक मजबूरी का हल है। इसके बजाय, हमें जागरूकता फैलानी होगी कि बाल मजदूरी न केवल बच्चों के अधिकारों का हनन है, बल्कि यह कानूनी अपराध भी है। यदि हम बच्चों को मजदूरी से मुक्त कर शिक्षा के मार्ग पर ला सकें, तो न सिर्फ उनके जीवन में बदलाव आएगा, बल्कि हमारा समाज भी एक बेहतर दिशा में अग्रसर होगा।

स्कूल की दूरी बनी बालिका की शिक्षा में बाधा, लेकिन हौसला है बरकरार

बातूनी रिपोर्टर मस्तरा व रिपोर्टर किशन

हाल ही में नोएडा की कुछ बस्तियों में पत्रकारों द्वारा बच्चों से मुलाकात के दौरान यह जानने का प्रयास किया गया कि वे स्कूल जा रहे हैं या नहीं? इसी दौरान, बस्ती में रहने वाली 8 वर्षीय बालिका नूपुर (परिवर्तित नाम) से बातचीत हुई। उसने बताया कि वह अपने परिवार के साथ किराए की झुग्गी में रहती है और इस समय स्कूल नहीं जा पा रही है। उसका स्कूल घर से करीब डेढ़ किलोमीटर दूर है, और अकेले वहां जाना उसके लिए मुश्किल भरा होता है। रास्ते में कई बड़े वाहन चलते हैं, जिससे सड़क पार करना खतरनाक

हो जाता है। पहले, जब बस्ती में 14 वर्षीय एक दीदी रहती थीं, तब वह उन्हीं के साथ स्कूल जाती थी। दीदी रास्ते में उसका हाथ पकड़कर सड़क पार करवा देती थीं, जिससे उसे कोई परेशानी नहीं होती थी। हालांकि, वह दीदी अब दूसरी जगह पर चली गई हैं, और अब उसके साथ स्कूल जाने वाला कोई नहीं है। उसके माता-पिता सुबह सात बजे ही काम पर निकल जाते हैं, जिससे भी उसे अकेले स्कूल जाने में कठिनाई होती है। हालांकि, स्कूल नहीं जाने का मतलब यह नहीं कि उसने शिक्षा छोड़ दी है। वह रोजाना चेतना संस्था की नन्हे परिंदे वेन में जाकर पढ़ाई कर रही है। वेन में उसे वही विषय पढ़ाए जाते हैं, जो वह स्कूल में पढ़ती थी। उसने यह बात अपने माता-पिता को भी बताई, और उन्होंने भरोसा दिलाया कि वे जल्द ही पास के किसी स्कूल में उसका दाखिला करवाने की कोशिश करेंगे।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

झुग्गियां तोड़ने का आदेश हुआ जारी तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों में बेघर होने का छाया डर

बालकनामा रिपोर्टर - सबेरुल
बातूनी रिपोर्टर - अजहरुल

गुरुग्राम के सरस्वती कुंज सेक्टर 52 में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की झुग्गियाँ और बिल्डिंग तोड़ने का आदेश जारी किया गया है, जिससे वहाँ रहने वाले परिवारों और स्कूल जाने वाले बच्चों में गहरी चिंता और बेचैनी है। यह निर्णय सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए एक गंभीर संकट लेकर आया है। इस जमीन के मालिक और यहाँ बनी बिल्डिंग के मालिक अलग-अलग हैं, लेकिन अब जमीन के मालिक ने इमारत गिराने का फैसला कर लिया है। इस इलाके में कई ऐसे मकान हैं, जहाँ बड़ी संख्या में कामकाजी बच्चे रहते हैं। इनके सामने अब बेघर होने का खतरा मंडरा रहा है। वहीं, झुग्गी में रहने वाले अजहरुल ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा, "यह हमारे लिए बहुत बड़ी परेशानी है। चारों तरफ बाउंड्री बना दी गई है, जिससे हमें स्कूल आने-जाने में काफी दिक्कत हो रही है। हमारे परिवार भी इस स्थिति से बेहद परेशान हैं। अब हम यहाँ से जाएँ तो जाएँ कहाँ?" झुग्गी में

रहने वाले कई अन्य कामकाजी बच्चों और उनके परिवारों का भी यही सवाल है। वे इस डर में जी रहे हैं कि अगर उन्हें इतनी जल्दी यहाँ से हटा दिया गया, तो उनके पास सिर छुपाने की कोई और जगह नहीं होगी। बच्चे, जो पहले ही आर्थिक तंगी की मार झेल रहे हैं और मजदूरी करने को मजबूर हैं, अब बेघर होने की आशंका से और अधिक परेशान हैं। कई परिवारों का कहना है कि वे इसी इलाके में काम करते हैं, और अगर उन्हें यहाँ से निकाल दिया गया, तो उनकी रोजी-रोटी भी छिन जाएगी। अब देखने वाली बात यह होगी कि प्रशासन और झुग्गीवासियों के बीच कोई समाधान निकलता है या नहीं?

बालिका के शिक्षा की ओर बढ़ते कदम

बातूनी रिपोर्टर महिमा
बालकनामा पत्रकार रितिका

बालकनामा पत्रकार रितिका जब गुरुग्राम के चक्करपुर गाँव की बस्ती का दौरा कर रही थीं, तब उनकी मुलाकात 12 वर्षीय महिमा से हुई। महिमा उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव की रहने वाली है, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वह अब स्कूल नहीं जा पाती। महिमा की माँ सुबह 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक और फिर शाम 3 बजे से 5 बजे तक कोठियों में काम करती हैं, जबकि उनके पिता एक मॉल में नौकरी करते हैं। ऐसे में घर की ज़िम्मेदारी महिमा के कंधों पर आ जाती है। वह अपनी छोटी बहन की देखभाल करती है।

महिमा ने गाँव में पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी, लेकिन परिस्थितियों के कारण उसे पढ़ाई छोड़नी पड़ी। जब बालकनामा पत्रकार ने महिमा से उसकी शिक्षा के बारे में पूछा, तो उसने मासूमियत से कहा कि वह स्कूल जाना चाहती है, लेकिन घर की जिम्मेदारियाँ उसे इसकी अनुमति नहीं देतीं। रितिका ने जब उससे पूछा, "अगर तुम्हें मौका मिले तो क्या तुम पढ़ना चाहोगी?" तो महिमा की आँखों में एक चमक आ गई। उसने उत्साह से कहा, "हाँ, मैं

पढ़ना चाहती हूँ! मेरे दोनों भाई स्कूल जाते हैं, और उन्हें देखकर मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। मैं भी पढ़ाई करना चाहती हूँ।" रितिका ने महिमा को चेतना संस्था के बारे में बताया और समझाया कि वह उनके शिक्षा केंद्र पर आ सकती है। महिमा यह सुनकर बेहद खुश हो गई और बोली, "ठीक है दीदी, जब मेरे भाई स्कूल से आ जाएंगे और मेरी छोटी बहन की देखभाल कर लेंगे, तब मैं भी पढ़ने आऊँगी!" महिमा की आँखों में उम्मीद की एक नई रोशनी थी। वह खुश थी कि अब वह भी पढ़ सकेगी और अपने सपनों को पूरा करने की ओर एक कदम बढ़ा रही है।

बचपन पर मंडराता खतरा, बाजार में संघर्ष और डर के साए में जीते बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

यह खबर एक ऐसे 15 वर्षीय बालक की है, जो रोजमर्रा की कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने परिवार के लिए मेहनत करता है। गाँव, मोहल्लों और बाजार इलाकों में कई बच्चे अलग-अलग तरह के काम करते हैं, लेकिन इस बालक की आपबीती बेहद चिंताजनक है। वह हर सुबह 5 बजे उठकर फल लेने के लिए बाजार जाता है और 8 बजे तक घर लौट आता है। फिर शाम 4 बजे से वह फल बेचने के लिए निकल पड़ता है। लेकिन जिस बाजार में वह काम करता है, वहां की सच्चाई उसे और कई अन्य बच्चों को भी डर और असुरक्षा में जीने पर मजबूर कर रही है।

उसने बताया कि बाजार में 15-17 साल के किशोरों से लेकर बड़े लोग चोरी-छिपे गांजा बेचते हैं। यह कारोबार खुलेआम चलता है, और अधिकतर लोग सब्जी, फल या कपड़े खरीदने नहीं आते, बल्कि इसी नशे के सौदे के लिए वहां पहुंचते हैं। बाजार से सटे जंगल में यह अवैध धंधा बेरोकटोक चलता है। इन लोगों ने पहचान छुपाने के लिए तरह-तरह के मास्क पहन रखे होते हैं, ताकि कोई उन्हें आसानी से पहचान न सके। जब पुलिस को इस गतिविधि की भनक लगती है और वे कार्रवाई के लिए आती है, तो ज्यादातर अपराधी भाग निकलते हैं, जबकि कुछ पकड़े जाते हैं। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में सबसे अधिक परेशानी उन बच्चों को झेलनी पड़ती है, जो बाजार में अपनी रोजी-रोटी के लिए काम कर रहे होते हैं। पुलिस जब भी छापेमारी करती है, तो 10 से 17 वर्ष तक के सभी बच्चों की कड़ी जांच की जाती है, क्योंकि अक्सर गांजा बेचने में नाबालिग भी शामिल पाए जाते हैं।

इस बालक ने बताया कि पुलिस वाले जब बाजार में आते हैं, तो वे बिना वजह उनकी ठेलियों पर चेकिंग शुरू कर देते हैं और कई बार धमकियां भी देते हैं। वे कहते हैं कि अगर पकड़े गए, तो बुरी तरह पीटा जाएगा और गालियों का इस्तेमाल कर डराने की कोशिश करते हैं। मजबूरी में इन बच्चों को यह सब सहना पड़ता है। अगर चेकिंग के दौरान कोई बच्चा कुछ कह देता है, तो पुलिसकर्मी गुस्से में आकर उनका सामान तक फेंक देते हैं। यह स्थिति बेहद चिंताजनक है। एक ओर बच्चे मेहनत कर अपनी ज़िंदगी संवारना चाहते हैं, तो दूसरी ओर वे न चाहते हुए भी इस भयावह माहौल में रहने को मजबूर हैं। क्या इन बच्चों को सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जीने का हक नहीं?

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली में गाने के माध्यम से दिया पोक्सो का संदेश

बातूनी रिपोर्ट इंशा

गुरुग्राम के बादशाहपुर समुदाय के बच्चों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली में एक अनोखे तरीके से पोक्सो एक्ट के बारे में जागरूकता फैलाई। 10 बच्चों ने मिलकर एक विशेष गाना प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने न सिर्फ पोक्सो एक्ट की जानकारी दी, बल्कि इसके महत्व और संदेश को भी समझाया। बच्चों ने बताया कि पोक्सो (यौन शोषण से बच्चों की सुरक्षा अधिनियम) 18 साल से कम उम्र के बच्चों की सुरक्षा के लिए बनाया गया कानून है। जिन बच्चों को इसकी जानकारी नहीं है, वे इस गाने के माध्यम से इसे समझ सकते हैं। इससे न केवल बच्चों को यौन शोषण से बचाने में मदद मिलेगी, बल्कि समाज में यह जागरूकता भी बढ़ेगी कि बच्चों की सुरक्षा के लिए एक सख्त कानून मौजूद है। गाने के माध्यम से बच्चों ने संदेश दिया कि यदि कोई बच्चा किसी गलत व्यवहार, अश्लील वीडियो दिखाने या छेड़छाड़ जैसी स्थिति का सामना करता है, तो उसे बिना किसी डर के इसकी जानकारी पुलिस तक पहुंचानी चाहिए। पोक्सो एक्ट के तहत दोषी को कड़ी सजा मिलेगी, और रिपोर्ट करने वाले बच्चे की पहचान को पूरी तरह गोपनीय रखा जाएगा, ताकि वह किसी भी तरह के दबाव में न आए। इस मौके पर विशेष गीत "क्या है पोक्सो, सुनो ये बात" भी प्रस्तुत किया गया, जो बच्चों की सुरक्षा और उनके अधिकारों को लेकर जागरूकता बढ़ाने का काम कर रहा है। आईआईटी दिल्ली की इस यात्रा के दौरान बच्चों ने परिसर का भ्रमण किया, जिससे वे काफी उत्साहित नजर आए। वहां विभिन्न संस्थाओं द्वारा बच्चों के लिए रोचक गेम्स भी आयोजित किए गए, जिनमें बादशाहपुर समुदाय के दो बच्चों ने हिस्सा लिया और पुरस्कार भी जीता। एक बच्चे ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, "मुझे यह पुरस्कार जीतकर बहुत अच्छा लग रहा है और इस यात्रा से यह सीखने को मिला कि यहां आने के लिए कितनी मेहनत और लगन की जरूरत होती है।" इस पूरी पहल ने बच्चों को जागरूक किया और उन्हें आत्मविश्वास और हौसले से भर दिया कि वे अपनी सुरक्षा और अधिकारों के बारे में खुलकर बात कर सकते हैं।

आवारा कुत्तों के आतंक से सड़क और कामकाजी बच्चे हुए परेशान

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टर अजीरुल

गुरुग्राम के वजीराबाद की बस्तियों में रहने वाले बातूनी रिपोर्टर अजीरुल ने एक बेहद गंभीर समस्या के बारे में बताया कि यहां के आवारा कुत्तों से बच्चे बहुत परेशान हैं। कई बच्चे डर और चिंता में रहते हैं क्योंकि इलाके में दो-तीन पागल कुत्ते घूम रहे हैं। जब बच्चे पास के पार्क या ग्राउंड में खेलने जाते हैं, तो ये कुत्ते लड़ते-लड़ते अचानक उनकी ओर दौड़ पड़ते हैं और काटने की कोशिश करते हैं। एक बच्चे ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा, "जब मैं अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था, तब अचानक एक पागल कुत्ता आया और मुझे काट लिया। मैं रोता-रोता घर पहुंचा और माता-पिता को बताया। घर में पैसे नहीं थे, फिर भी मेरे माता-पिता ने उधार लेकर मेरी दवाई करवाई और मुझे कुत्ते के काटने से बचाव की सुई लगवाई। उस सुई से मुझे बहुत डर लगता था, इसलिए मैं बहुत रोया।" बच्चों का कहना है कि इन कुत्तों की वजह से वे अकेले बाहर नहीं जा पाते। हालांकि, दो-तीन दिन से उन पागल कुत्तों का कोई पता नहीं है। बच्चों को लगता है कि शायद किसी ने डॉग रेस्क्यू टीम को फोन कर दिया, जिससे वे कुत्तों को पकड़कर ले गए। लेकिन अब भी रास्तों में बहुत सारे आवारा कुत्ते हैं, जो बच्चों को देखकर भौंकते हैं और डराते हैं। बच्चे चाहते हैं कि जो लोग कुत्ते पालते हैं, वे उन्हें बांधकर रखें, क्योंकि सबसे आसान शिकार बच्चे ही बनते हैं। अगर किसी बच्चे की पीठ पर थैला या बोरी हो, तो कुत्ते उसे और ज्यादा दौड़ाने लगते हैं। यही वजह है कि कूड़ा बीनने वाले बच्चे उस तरफ जाने से डरते हैं। अजीरुल और उसके दोस्तों की यह आवाज उन सभी लोगों तक पहुंचनी चाहिए, जो इस समस्या को हल कर सकते हैं, ताकि बच्चे निडर होकर खेल सकें और अपनी ज़िंदगी बिना डर के जी सकें।

माता-पिता के अभाव में क्या नवीन कर पाएगा अपने सपने को साकार?

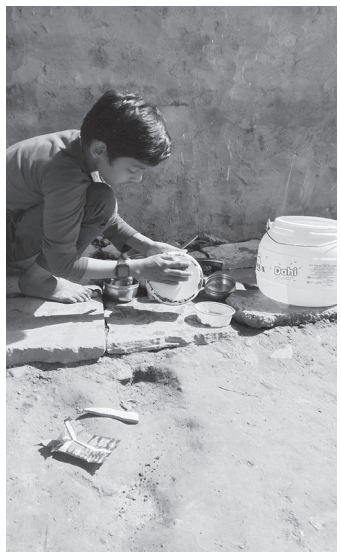

बातुनी रिपोर्टर प्रवीण, रिपोर्टर खुशबू

जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने एमार टावर के नजदीकी समुदाय (गुरुग्राम, बादशाहपुर) का दौरा किया, तो वहां की रिपोर्टर खुशबू ने हमें नवीन (परिवर्तित नाम) नाम के एक 11 वर्षीय बच्चे की कहानी सुनाई। नवीन ने बताया, "मेरी माँ कई सालों से बीमार थीं और मेरे पिता शराब के आदी थे। बीमारी के कारण मेरी माँ की मृत्यु हो गई और उसके कुछ समय बाद मेरे पिता भी मुझे अकेला छोड़कर चले गए। तब से मेरे नाना जी ने ही मेरी परवरिश की है।" नवीन की आवाज में एक अजीब-सी बेबसी थी। उसने आगे कहा, "मेरे नाना बहुत गरीब हैं। उनके पास इतने पैसे नहीं कि वे मेरा स्कूल में दाखिला करवा सकें। मेरा भी मन करता है स्कूल जाने का, पढ़ने-लिखने का, लेकिन हालात ऐसे हैं कि यह संभव नहीं। घर का खर्चा ही मुश्किल से चलता है, पढ़ाई का खर्च कहां से आएगा?" कभी-कभी जब मजदूरी का कोई काम मिलता है, तो नवीन के नाना जी काम करने चले जाते हैं, लेकिन स्थायी आमदनी का कोई जरिया नहीं होने के कारण वे नवीन को स्कूल नहीं भेज पा रहे थे। नवीन की यह दयनीय स्थिति देखकर हम सभी बहुत भावुक हो गए। जब हमने उसे अपने "चेतना संस्था" के बारे में बताया कि हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में सहायता करते हैं और उनका सरकारी विद्यालयों में दाखिला करवाते हैं, तो नवीन की आँखों में आशा की एक नई किरण दिखाई दी। यह सुनकर वह बहुत खुश हुआ और तुरंत हमारे संगठन का सदस्य बनने के लिए तैयार हो गया। खुशबू भी बेहद प्रसन्न थी कि उसकी रिपोर्टिंग के कारण किसी बच्चे को स्कूल जाने का मौका मिलेगा। उसने कहा, "नवीन की स्थिति देखकर मुझे बहुत दुख हुआ था, लेकिन अब मुझे सुकून है कि वह अपने सपनों को पूरा कर सकेगा।" अब नवीन "चेतना संस्था" का हिस्सा है और जल्द ही उसका दाखिला बादशाहपुर के सरकारी विद्यालय में कराया जाएगा, ताकि उसका स्कूल जाने का सपना हकीकत बन सके।

सुन नहीं सकती, बोल नहीं सकती, लेकिन जीत सकती है!

बातूनी रिपोर्टर रेशमा व रिपोर्टर किशन

यह सच है कि किसी की कमजोरी उसकी मजबूरी हो सकती है, लेकिन वही कमजोरी उसे कामयाबी की ऊँचाइयों तक भी पहुँचा सकती है। हमारे आसपास कई ऐसे बच्चे हैं जो न सुन सकते हैं और न बोल सकते हैं, लेकिन फिर भी अपने लक्ष्य की ओर लगातार बढ़ रहे हैं। पश्चिम दिल्ली की एक बस्ती में 16 वर्षीय बालिका ज्योति (परिवर्तित नाम) से मुलाकात के दौरान उसने अपनी 13 वर्षीय सहपाठी नीलम (परिवर्तित नाम) की सफलता की कहानी साझा की। यह बालिका आठवीं कक्षा में पढ़ती है और सुनने और बोलने में असमर्थ है। जब विद्यालय में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, तो उसके सहपाठियों और शिक्षकों को इस बात की आशंका थी कि वह किसी खेल में भाग नहीं ले पाएगी। कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन जैसी प्रतिस्पधाओं में कक्षा के अन्य छात्र टिक नहीं पाए, लेकिन वही बालिका, जिस पर किसी को भरोसा नहीं था, उसने अपनी प्रतिभा से सबको चौंका दिया। बैडमिंटन प्रतियोगिता में उसने अद्भुत प्रदर्शन किया और प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। उसकी इस उपलब्धि से शिक्षक, सहपाठी और पूरा विद्यालय गर्व से भर उठा। पहले, सहपाठी उसकी शारीरिक अक्षमता को कमजोरी मानते थे और उसे किसी भी प्रतियोगिता में आगे नहीं बढ़ाते थे। लेकिन जब उसने अपनी प्रतिभा से खुद को साबित किया, तो सभी का नजरिया बदल गया। इस शानदार जीत के उपलक्ष्य में विद्यालय ने उसे तीन दिन के शैक्षिक भ्रमण का अवसर भी दिया। यह घटना हमें यह सिखाती है कि किसी की कमजोरी उसकी शक्ति भी बन सकती है—बस जरूरत होती है सही अवसर और आत्मविश्वास की!

बच्चों की सुरक्षा पर मंडरा रहा खतरा

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक
बातूनी रिपोर्टर : कोमल

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की कच्ची बस्ती कली का भट्टा का दौरा किया, जहां उन्होंने रास्ते में बच्चों को एक नाला पार करते देखा। यह दृश्य देखकर उन्होंने बच्चों से पूछा, "क्या बस्ती में आने-जाने के लिए कोई और रास्ता नहीं है? क्या इस खतरनाक रास्ते से गुजरते हुए डर नहीं लगता?"

इस पर 10 साल की बालिका कोमल ने बताया कि कई बच्चों को इस जोखिम भरे रास्ते से गुजरना पड़ता है, जहां उन्हें पानी से भरे नाले के ऊपर से जाना पड़ता है। बरसात के मौसम में यह समस्या और गंभीर हो जाती है, जब पानी का स्तर बढ़ जाता है और रास्ता बेहद फिसलन भरा हो जाता है।

"कई बार बच्चे गिरने से बाल-बाल बचे हैं, और कुछ को तो चोट भी लगी है" यह रास्ता विद्यालय जाने का सबसे छोटा मार्ग है, लेकिन इसकी खतरनाक स्थिति के कारण कई बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं। यदि वे दूसरे रास्ते से जाते हैं, तो उन्हें लंबा सफर तय करना पड़ता है, जो समय और ऊर्जा दोनों की बबार्दी है।

कई अभिभावकों ने भी बच्चों की सुरक्षा को लेकर डर के कारण उन्हें स्कूल भेजना कम कर दिया है। स्थानीय लोगों ने कई बार इस समस्या को प्रशासन और पार्षद के सामने उठाया है, लेकिन अभी तक कोई ठोस समाधान नहीं निकला है। यदि जल्द ही कोई उचित व्यवस्था नहीं की गई, तो बच्चों की सुरक्षा पर गंभीर खतरा बना रहेगा और उनकी शिक्षा भी प्रभावित होती रहेगी।

धूल से बीमार हो रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर गुरुग्राम
बातूनी रिपोर्टर सोनू कुमार गुरुग्राम

जब बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर जेएमडी, गुरुग्राम की बस्तियों में पहुंचे, तो वहां के बच्चों से बातचीत के दौरान एक गंभीर समस्या सामने आई। बच्चों ने बताया, "यहां पास में ही गिट्टी-बजरी का काम होता है और सड़क किनारे बहुत मिट्टी पड़ी रहती है। हल्के और भारी वाहन दिन-रात यहां से गुजरते हैं, जिससे चारों तरफ धूल उड़ती है। ट्रक और ट्रैक्टर लगातार आते-जाते रहते हैं, और इस वजह से हमें बहुत परेशानी होती है।" बच्चों ने अपनी तकलीफ साझा करते हुए बताया कि धूल के कारण सांस लेने में दिक्कत होती है, अक्सर सांस फूलने लगता है, और सेहत खराब होने लगी है। उनका खेलना-कूदना भी प्रभावित हुआ है, क्योंकि घर के पास ही यह समस्या बनी हुई है, और वहां रहना मुश्किल होता जा रहा है। जब रिपोर्टर राजकिशोर को इस बारे में पता चला, तो वे तुरंत उस इलाके में पहुंचे और खुद हालात का जायजा लिया।आसपास के लोगों और बच्चों से बातचीत के बाद पुष्टि हुई कि यह समस्या वास्तव में गंभीर है।

स्थानीय निवासियों ने भी कहा कि "इतनी ज्यादा धूल उड़ती है कि घरों के अंदर तक सामान खराब हो जाता है। धूल से एलर्जी और सांस संबंधी बीमारियां बढ़ रही हैं, लेकिन इसका कोई समाधान नहीं हो रहा है।" यह एक ऐसी समस्या है, जिससे वहां के बच्चे, बड़े और बुजुर्ग सभी प्रभावित हो रहे हैं, लेकिन अब तक इस पर किसी का ध्यान नहीं गया। क्या इन बच्चों की आवाज कहीं सुनी जाएगी?

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सुरक्षा के अभाव में हादसों का शिकार होते बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

यह खबर अंकित (परिवर्तित नाम) की है, जो दिल्ली के शहीद कैंप की झुग्गियों में पिछले एक साल से रह रहा है। नौ साल का अंकित इस समय चौथी कक्षा में पढ़ रहा है और उसका स्कूल में दाखिला अप्रैल 2024 में चेतना संस्था के सहयोग से हुआ था। दाखिले के बाद से वह न सिर्फ नियमित रूप से स्कूल जा रहा है, बल्कि संस्था से शिक्षा केंद्र पर भी पढ़ाई करने आता है। एक दिन स्कूल की छुट्टी होने के कारण अंकित अपने छोटे भाई के साथ घर के पास एक बड़े नाले के ऊपर गेंद से खेल रहा था। खेल-खेल में अचानक उसकी गेंद उछलकर नाले में गिर गई। गेंद लेने के लिए वह नाले की तरफ बढ़ा, लेकिन तभी उसका पैर फिसल गया और वह सीधे दलदल में जा गिरा। जहां वह गिरा, वहां आसपास कोई नहीं था। उसका छोटा भाई ऊपर खड़ा इंतजार कर रहा था, लेकिन अंकित को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह दलदल से बाहर निकलने की पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन दलदल काफी गहरा था और वह धीरे-धीरे उसमें धंसता जा रहा था। डर और घबराहट के बीच उसने मदद के लिए आवाज लगाने की कोशिश की, लेकिन उसकी आवाज

नहीं निकल पाई। तभी उसकी नजर नाले की दीवार पर लटकी एक तार पर पड़ी। बचने की आखिरी उम्मीद देखते ही उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर तार तक पहुंचने की कोशिश की। काफी मशक्कत के बाद उसका हाथ तार तक पहुंचा और उसने कसकर उसे पकड़ लिया। पूरी ताकत लगाकर वह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा और आखिरकार सफल रहा। जैसे ही वह ऊपर आया, वहां मौजूद कुछ लड़कों ने उसे देखा और फौरन उसकी मां को बुलाया। घर पहुंचने के बाद उसे नहलाया गया, तब जाकर सभी ने राहत की सांस ली। शहीद कैंप के इस नाले में बच्चों की सुरक्षा के लिए कोई तार या दीवार नहीं है। यहां अक्सर बच्चे इसी तरह गिरते हैं या घायल हो जाते हैं। यह चिंता का विषय है कि आखिर कब तक बच्चों की सुरक्षा को लेकर ऐसी लापरवाही बरती जाती रहेगी?

चेतना संस्था के सहयोग से बालिका के जीवन में आया बदलाव

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: पूनम

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की मांग्यवास बस्ती का दौरा किया, जहां उन्होंने सड़क और कामकाजी बच्चों के अनुभवों को समझने का प्रयास किया। इसी दौरान 11 वर्षीय पूनम से मुलाकात हुई, जिसने अपने जीवन में आए बदलावों को साझा किया। पूनम ने बताया कि करीब तीन साल पहले वह अपनी मां और भाइयों के साथ कबाड़ बीनने जाती थी। उसके पिता ऑटो ड्राइवर थे, लेकिन नशे की लत के कारण परिवार में रोजाना झगड़े होते थे। इस माहौल में रहना बेहद मुश्किल था। कई बार तो भूखे भी सोना पड़ता था। सरकारी स्कूलों में पढ़ाई भले ही मुफ्त थी, लेकिन अधूरे दस्तावेजों के कारण उसका दाखिला नहीं हो पा रहा था। ऐसे में उसका अधिकतर समय कबाड़ बीनने और घर के कामों में ही गुजरता था। शिक्षा से दूर होने के कारण उसके भविष्य को लेकर अनिश्चितता बनी हुई थी। लेकिन फिर एक दिन उसे चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र के बारे में पता चला। वह वहां जाने लगी और केंद्र की बैठकों व गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने लगी। जीवन कौशल कार्यशाला के माध्यम से उसे आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिली।

इस कार्यशाला ने न केवल उसे अपनी समस्याओं का समाधान करना सिखाया, बल्कि उसके अंदर अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई। उसे यह एहसास हुआ कि शिक्षा उसका अधिकार है और यह उसके भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है।

संस्था की मदद से पूनम का आखिरकार स्कूल में दाखिला हो गया।

वह कहती है, "यह बदलाव चेतना संस्था के प्रयासों से संभव हो पाया। इसने न केवल मुझे शिक्षा की ओर प्रेरित किया, बल्कि मेरे जीवन में आत्मनिर्भरता और जागरूकता भी लाई।" पूनम की पढ़ाई के प्रति बढ़ती रुचि और समर्पण को देखकर उसकी मां ने भी उसे काम पर ले जाना बंद कर दिया। अब वे उसकी शिक्षा को प्राथमिकता दे रही हैं और चाहती हैं कि वह अपने सपनों को पूरा करे। पूनम की कहानी इस बात का प्रमाण है कि सही मार्गदर्शन और शिक्षा से किसी का भी जीवन बदल सकता है। चेतना संस्था ने उसे न केवल शिक्षा की रोशनी दिखाई, बल्कि आत्मनिर्भर बनने की राह भी सिखाई।

परिवार की आर्थिक मदद के लिए बाल श्रम करने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने हाल ही में जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान जयसिंहपुरा खोर की बस्ती में उन्होंने एक 8 वर्षीय बालक, मनु (परिवर्तित नाम) का संघर्ष देखा, जो जीवन की कठोर सच्चाइयों से जूझते हुए अपने परिवार का सहारा बनने की कोशिश कर रहा था। जब रिपोर्टर दामिनी ने बस्ती का दौरा किया, तो उन्होंने मनु को सड़क किनारे पोहे बेचते देखा। बातचीत के दौरान मनु ने बताया, "हमारे पास पैसे नहीं हैं। मेरी मां गुड़िया बनाकर बेचने जाती हैं और मेरी बड़ी बहन रिया भी उनकी मदद करती है। कभी गुड़िया अच्छे दामों पर बिक जाती है, तो कभी हमें खाली हाथ लौटना पड़ता है। ऐसे में घर का खर्चा चलाना मुश्किल हो जाता है। इसलिए मेरी मां मुझे पोहे बनाकर देती हैं, और मैं उन्हें बेचता हूं।" मनु पोहे की एक प्लेट 5 रुपये में बेचता है और रोजाना करीब 40 से 50 रुपये कमा लेता है। उसने बताया कि जितने भी पैसे इकट्ठा होते हैं, वह अपनी मां को दे देता है ताकि परिवार की जरूरतें पूरी हो सकें। जब रिपोर्टर ने उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा, तो मनु की आवाज में एक अनकही पीड़ा झलकने लगी। उसने बताया कि उसका विद्यालय में नामांकन हुआ था, लेकिन वह नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाता था। अगर वह स्कूल जाता, तो पोहे नहीं बेच पाता, जिससे घर का खर्च और मुश्किल हो जाता। इसी कारण उसकी मां ने उसे स्कूल से निकाल दिया। हालांकि, मनु का सपना अब भी जिंदा है। उसने कहा,

"मैं चाहता हूं कि मेरा फिर से स्कूल में एडमिशन हो जाए। मैं अच्छी पढ़ाई करके एक अच्छी नौकरी करना चाहता हूं, ताकि अपने परिवार की मदद कर सकूं।" मनु की यह कहानी केवल संघर्ष की नहीं, बल्कि उन लाखों बच्चों की हकीकत को बयां करती है जो विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अपने सपनों को जिंदा रखे हुए हैं। यह उन बच्चों के लिए भी एक संदेश है जो कठिनाइयों से हार मानने के बजाय आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं।

जब अपनों ने ही लगा दी बच्चों के सपनों पर की पाबंदी

रिपोर्टर सुफियान शमशाद खान

पश्चिमी दिल्ली के जखीरा राखी मार्केट समुदाय में जहां कई बच्चे स्कूल जाने की चाहत रखते हैं, लेकिन उनके अभिभावक ही उनके रास्ते में सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। 12 साल का राजू (परिवर्तित नाम), जो जखीरा की झुग्गियों में अपने पिता के साथ रहता है, उसका भी सपना था कि वह स्कूल जाकर पढ़ाई करे और एक अच्छा भविष्य बनाए। उसकी मां का साया पहले ही उठ चुका था, और घर में केवल उसके पिता थे। एक दिन हिम्मत जुटाकर राजू ने अपने पापा से कहा,

"पापा, मैं भी स्कूल जाना चाहता हूं। पढ़-लिखकर कुछ अच्छा करना चाहता हूं।" लेकिन उसके पिता ने यह सुनते ही गुस्से में आकर उसे डांट दिया, "तुझे स्कूल जाने की कोई जरूरत नहीं है, घर में रहकर काम कर।" राजू के सपनों को इस बेरुखी से ठुकराया जाना उसके लिए असहनीय था। उसने फिर से ज़िद पकड़ ली, "नहीं पापा, मुझे स्कूल जाना ही है, बाकी बच्चों की तरह मैं भी पढ़ाई करूंगा!" यह सुनकर उसके पिता का गुस्सा और भड़क गया। उन्होंने राजू को बुरी तरह पीटा और कमरे में बंद कर दिया। मगर राजू अपने इरादों पर अडिग रहा, बार-बार स्कूल जाने की मांग करता रहा। यह देखकर उसके पिता और भड़क गए और गुस्से में बोले, "तू अब कभी स्कूल नहीं जाएगा, अब से तू काम करेगा!" इसके बाद राजू को जबरदस्ती एक दुकान पर काम पर लगा दिया गया। वह सुबह 9 बजे दुकान जाता और रात 9 बजे लौटता। जो भी मेहनत से कमाता, उसके पिता वह सारा पैसा छीन लेते और शराब-सिगरेट में उड़ा देते। राजू के हिस्से में न भरपेट खाना आता, न प्यार। जब भी वह खाने के लिए पैसे मांगता, उसके पिता उसे बेरहमी से पीट देते। राजू की आँखों में एक उज्ज्वल भविष्य का सपना था, लेकिन उसके पिता ने उसे अंधेरे में धकेल दिया। शिक्षा का अधिकार होते हुए भी वह इससे वंचित रह गया। उसके सपने अभी भी अधूरे हैं, लेकिन क्या वे हमेशा अधूरे ही रहेंगे?

मुश्किलों के साए में रंगों से बुने सपने

बालकनामा रिपोर्टर : दामिनी
बातूनी रिपोर्टर : सिया

जयपुर के जयसिंहपुरा खोर बस्ती की 11 वर्षीय सिया, बस्ती की नन्ही कलाकार, अपनी कल्पनाओं और रंगों की जादूगरी से न केवल अपने छोटे से घर को, बल्कि पूरी बस्ती की दीवारों और पुरानी मूर्तियों को नई पहचान दे रही है। सिया का मानना है कि पुरानी चीजें कभी बेकार नहीं होतीं, बस उन्हें एक नई पहचान की जरूरत होती है। अपनी इसी सोच के साथ वह पुरानी मूर्तियों पर रंग भरकर और सजावट करके उन्हें नया जीवन देती है। उसकी कला की यह अद्भुत यात्रा अब पूरे इलाके में चर्चा का विषय बन चुकी है, और वह अपनी कला के दम पर बस्ती में प्रेरणा का स्रोत बन गई है। सिया का यह सफर साधारण कागज पर स्केच और रंग भरने से शुरू हुआ था, लेकिन उसकी लगन और हुनर ने उसे दीवारों तक पहुँचा दिया। अब बस्ती की कई दीवारें सिया की रंगों भरी कहानियों से सज चुकी हैं। उसकी रचनात्मकता सिर्फ दीवारों तक सीमित नहीं है; उसे पुरानी मूर्तियों और बेकार समझी जाने वाली चीजों को नया रूप देने का भी शौक है।

टूटी-फूटी या रंग-रूप खो चुकी पुरानी मूर्तियों को सिया अपने हाथों से संवारती, सजाती और उनमें नए रंग भरती है। उसकी इस अनोखी कला को देखकर बस्ती के लोग न सिर्फ हैरान

रह जाते हैं, बल्कि गर्व से भी भर जाते हैं। 5वीं कक्षा में पढ़ने वाली सिया पढ़ाई में भी होशियार है, लेकिन उसे पेंटिंग से खास लगाव है। वह कहती है, "मुझे रंगों से खेलना बहुत पसंद है। जब मैं कुछ नया बनाती हूं, तो लगता है कि मैं दुनिया को और खूबसूरत बना रही हूं। मैं बड़ी होकर एक मशहूर चित्रकार बनना चाहती हूं, ताकि मेरी कला की पहचान पूरे देश और दुनिया में हो।" सिया की यह यात्रा इस बात का उदाहरण है कि उम्र या संसाधनों की कमी कभी भी सच्ची लगन और हुनर के आगे दीवार नहीं बन सकती। अगर दिल में कुछ करने का जज्बा हो, तो छोटी-छोटी कोशिशें भी बड़े बदलाव की शुरूआत बन सकती हैं।

कूड़े के ढेर की बदबू से बीमार पड़ रहे हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर अली
रिपोर्टर किशन

बालकनामा पत्रकारों ने विभिन्न राज्यों और स्थानों का दौरा करते हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बस्तियों में फैली गंदगी और कूड़े-कचरे के ढेरों को करीब से देखा। अधिकतर बस्तियों में बदबू और गंदगी इतनी अधिक थी कि वहाँ रहने वाले बच्चों को हर दिन इसका सामना करना पड़ रहा था। नोएडा की एक बस्ती में रहने वाली 13 वर्षीय बालिका सुमन (परिवर्तित नाम) ने इस समस्या को विस्तार से साझा किया। उसने बताया कि जिस स्थान पर वह रहती है, वहाँ करीब डेढ़ सौ से अधिक झुग्गियाँ हैं। इन झुग्गियों के आसपास ही कूड़े-कचरे के ढेर लगे हुए हैं, और यह कूड़ा खुद बस्ती के लोग ही फेंकते हैं। "रास्ते में चलना मुश्किल हो जाता है, चारों तरफ इतनी बदबू होती है कि सहन करना मुश्किल हो जाता है। इस वजह से बस्ती के कई बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। इतना ही नहीं, घरेलू कूड़े-कचरे के अलावा, बस्ती के लोग अपने घरों का गंदा पानी और बचा हुआ भोजन भी इन्हीं कूड़े के ढेरों में फेंक देते हैं। कई बार बस्ती के ठेकेदार से सफाई करवाने की मांग की गई, लेकिन हर बार सिर्फ आश्वासन

ही मिला। ठेकेदार सफाई कराने की बात तो करता है, लेकिन इस पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं करता। इस स्थिति में जी रहे बच्चों का दर्द उनकी आँखों में साफ झलकता जो दशार्ता है की ये एक ऐसी समस्या, जो न केवल उनकी सेहत को प्रभावित कर रही है, बल्कि उनके भविष्य पर भी सवाल खड़े कर रही है।

जेबकतरों की हरकतों से बस्ती के बच्चे हुए परेशान

ब्यूरो रिपोर्ट

राजधानी दिल्ली में आज भी कुछ असामाजिक तत्व खुलेआम लोगों से लूटपाट करने में लगे हुए हैं। दिनदहाड़े बच्चों और बड़ों के साथ छीना-झपटी की घटनाएँ हो रही हैं, लेकिन सवाल उठता है की क्या उस वक्त आसपास कोई व्यक्ति या पुलिस मौजूद नहीं रहती? इस गंभीर मुद्दे को समझने के लिए हमने घटनास्थल पर जाकर वहाँ के बच्चों से बात की, जिन्होंने बालकनामा के साथ अपनी आपबीती साझा की। बस्ती में रहने वाली 15 वर्षीय एक निशा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनकी बस्ती के पास ही रेल की पटरियाँ हैं, जहाँ हर पाँच मिनट में ट्रेन गुजरती है। लेकिन कई बार ट्रेनें घंटों तक खड़ी रहती हैं, और किसी को यह नहीं पता होता कि वे कब चलेंगी। पटरी के पास कई खाली मैदान हैं, जहाँ बड़े-बड़े नशेड़ी लोगों का जमावड़ा लगता है। वे वहाँ नशा करते हैं और राहगीरों के लिए खतरा बने हुए हैं। जब बच्चे या बड़े रेलवे ट्रैक से गुजरते हैं, तो उन्हें हमेशा डर बना रहता है क्योंकि ये नशेड़ी कभी भी हमला कर सकते हैं। सबसे ज्यादा खतरा तब होता है जब कोई व्यक्ति या बच्चा ट्रैक के बीच खड़ा हो और दोनों ओर से ट्रेनें गुजर रही हों, ऐसे में ये अपराधी हमला कर मोबाइल, पैसे और जो कुछ भी मिल सके, छीन लेते हैं। अगर कोई विरोध करे, तो उनके पास ब्लेड जैसे धारदार हथियार होते हैं, जिनसे वे हमला कर देते हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि ये अपराधी कई बार भाग जाते हैं और कभी-कभी पकड़ में भी आ जाते हैं, लेकिन उनके गिरोह के साथी उन्हें बचाने आ जाते हैं। अगर पुलिस कभी पकड़ भी लेती है, तो वे अपने संपर्कों के जरिए छूट जाते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि रेलवे पटरियों पर लंबे समय तक खड़ी ट्रेनों के कारण उन्हें अक्सर मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। कई बार वे ट्रैक पार करने की कोशिश करते हैं, लेकिन अचानक ट्रेन चल पड़ती है, जिससे कई बार हादसे हुए हैं। कुछ बच्चे इस तरह की घटनाओं में बाल-बाल बचे हैं, जबकि कई लोगों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी है। यह एक बेहद गंभीर स्थिति है, जिससे निपटने के लिए प्रशासन को जल्द से जल्द ठोस कदम उठाने की जरूरत है, ताकि बच्चे और आम नागरिक सुरक्षित रह सकें।

बालक की समझदारी को सलाम

बातूनी रिपोर्टर चंदन व रिपोर्टर काजल

जयपुर की कुछ बिस्तयों में पत्रकारों ने बच्चों के साथ बैठक आयोजित की। इस बैठक में बस्ती के बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी समस्याएं और अनुभव साझा किए। एक बालक ने अपनी स्थिति बताते हुए कहा, "हमारी बस्ती में एक 11 वर्षीय बच्चा है, जिसकी माँ का निधन हो चुका है। पिता मौजूद हैं, लेकिन वह बेलदारी का काम करते हैं। यह बच्चा होटल में बर्तन धोने, सफाई करने का काम करता है। वह सुबह 6 बजे काम पर निकल जाता है और रात 11 बजे घर लौटता है। महीने के ?6000 कमाता है, और यह पैसे वह अपने पिता को दे देता है, जिससे घर का खर्च चलता है। लेकिन एक खुशी की बात यह है कि उसे रात में घर पर खाना नहीं बनाना पड़ता, क्योंकि वह होटल से रोज अपने पिता और खुद के लिए खाना ले आता है।" बालक ने आगे बताया कि कभी-कभी उसके पिता उन पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं, जैसे जुआ और शराब में खर्च कर देते हैं। यह देखकर उसे बहुत दुख होता है, लेकिन उसके पास कोई और नहीं है जो उसे समझ सके। उसने यह भी बताया कि जब उसके पिता होश में होते हैं, तो वह उसके साथ अच्छे से पेश आते हैं, लेकिन जब वे शराब

पीकर जुआ खेलकर आते हैं, तो वह उसे गुस्से में मारते हैं और रात को घर से बाहर निकाल देते हैं। वह रात को उस स्थान पर चला जाता है, जहाँ उसके पिता काम करते हैं, और वहां पूरी रात बिताता है। जब पिता को होश आता है, तो वह अपनी गलती पर पछताते हैं और बच्चे से माफी मांगते हैं। बच्चे ने कहा, "मेरे पिता के अलावा इस दुनिया में कोई मेरा नहीं है। पिताजी जैसे भी हैं, मेरे लिए वे ही सही हैं। आज नहीं तो कल, वह सब समझ ही जाएंगे।"

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार, एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471